भारत में समाजवाद के जनक : आचार्य नरेन्द्र देव

***डॉ0 आनन्द प्रकाश**

वर्तमान समय में समाजवाद शब्द जिस अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है उसकी सम्बद्धता औद्योगिक क्रान्ति के उपरान्त स्थापित समाज व्यवस्था के सन्दर्भ में ही समझी जा सकती है। कुछ लोग समाजवाद की प्रेरणा का स्रोत प्लेटो की 'रिपब्लिक' को मानते हैं और कुछ लोग इसका उद्गम फ्राँस की राज्यक्रान्ति में ढूढते हैं। लेकिन वैज्ञानिक समाजवाद का प्रारभ कार्ल मार्क्स से ही माना जाता है।[1]

भारत में समाजवादी विचारधारा प्रायः रूसी क्रान्ति के समय आयी तथा समाजवाद का विकास राश्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम के साथ–साथ हुआ। उस समय मार्क्सवादी साहित्य भी भारत में उपलब्ध होने लगा था। भारतीय समाजवादी विचारकों में आचार्य नरेन्द्र देव का नाम उल्लेखनीय है। उन्होंने राश्ट्रीयता और समाजवाद से अलंकृत उस युग को प्रदान किया जिसका अपना महत्वपूर्ण स्थान है। विश्व समाजवाद के चिन्तन में समाजवाद के साथ जनतांत्रिक विषेशण को जोड़ने का श्रेय नरेन्द्र देव को ही जाता है, इसीलिए उन्हें "भारतीय समाजवाद का जनक" कहा जाता है।[2]

नरेन्द्र देव भारत के उन समाजवादियों में थे जिन्होंने समाजवाद की एक रूपरेखा निर्मित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। वे अपने समाजवादी विचारों का निर्माण राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के दौरान करते हैं।[3] उनके समाजवादी चिन्तन और व्यक्तित्व के विकास में दो महत्वपूर्ण तत्व थे : एक, महात्मा बुद्ध का उदाहरण दूसरा, कार्ल मार्क्स के विचार। बुद्ध व मार्क्स दोनों ही समाजिक क्रान्ति के प्रवर्तक थे। नरेन्द्र देव ने इन दोनों के विचारों के तत्वों को ग्रहण किया था।[4]

नरेन्द्र देव को राजनीति, भारतीय संस्कृति तथा इतिहास के क्षेत्र में जो नेतष्त्व एवं अपूर्व कल्पनाषक्ति प्राप्त थी उससे देश पूर्ण परिचित है। इतिहास और संस्कृति के अध्ययन ने ही उन्हें बौद्धधर्म व दर्षन की ओर आकर्शित किया। उन्होंने हीनयान के दर्शन और धर्म के अध्ययन के साथ–साथ संस्कृत के महायानी दर्षनों का भी अध्ययन किया था। यह भी सत्य है कि उनके जीवन का परवर्ती 20–22 वर्ष समाजवाद और मार्क्स के जीवन दर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुआ किन्तु इतने से ही उनके जीवन की व्याख्या नहीं की जा सकती उनके जीवन का जो सहज एवं समन्वित अंगागिभाव था उसे भी देखना होगा। अवश्य ही सन् 1933–34 तक उनके जीवन में एक ऐसी सांस्कृतिक भूमि तैयार हो चुकी थी जिसकी नैतिकता और उदारता बौद्ध दर्षन के तेज से परीक्षित हो चुकी थी।[5]

अब तक पाश्चात्य दर्शनों से वे परिचित हो चुके थे किन्तु जीवन–सम्बन्ध दर्षन की जिज्ञासा उनमें उत्तरोत्तर प्रबल होती जा रही थी। पाली और बौद्ध दर्शन के अध्ययन ने उन्हें नैतिक एवं आध्यात्मिक मान्यताओं की चमत्कारपूर्ण व्याख्या दी। उनका जीवन बौद्धों की नैतिक दृष्टि से बड़ा ही प्रभावित था। आर्य शान्तिदेव के "बोधिचर्यावतार" के हृदयग्राही पद्य उन्हें बड़े ही प्रिय थे। घोर राजनीतिक अस्तव्यस्तता के बीच जब–जब उन्हें समय मिला, बौद्ध दर्षन का अध्ययन किया करते थे। उन्होंने अनेक बौद्ध ग्रन्थों की रचना कीं उनकी प्रमुख रचना "बौद्ध धर्म और दर्शन" नामक ग्रन्थ है।[6]

बौद्धों का गतिषील दर्षन मानव मन के भेद और उसकी क्रिया–प्रतिक्रियाओं का विस्तष्त विष्लेशण, व्यक्ति के द्वारा सर्व समाज के उद्धार का संकल्प, जातिवाद, शस्त्रवाद तथा देववाद आदि का विरोधी था। ये तत्व ऐसे मानवीय एवं सामाजिक हैं जो पुरानी मान्यताओं को नवीन दृष्टि से देखने की शक्ति प्रदान करते हैं। नरेन्द्र देव ने बौद्ध धर्म के इसी मानवतावादी दर्शन से प्रभावित होकर समस्त भारतीय संस्कृत का पर्यवेक्षण किया था। वे कहा करते थे कि "नैतिकता और आध्यात्मिकता की जो तर्क सम्मत और हृदयग्राही व्याख्या बौद्धों ने की है, उससे व्यक्ति में अन्ध परम्परा से विमुक्त संस्कृति के निरीक्षण की शक्ति आती है।" नरेन्द्र देव की नैतिकता इसी सुदृढ़ दार्शनिक व्याख्या के आधार पर प्रकट हुई। इसी के आलोक में उन्होंने प्राच्य–प्रतीत्य के विभिन्न नैतिक व्याख्याओं का पर्यालोचन किया और मस्तिष्क में भारतीय संस्कष्त का एक अपूर्व चित्र बनाया था। इसी संस्कृति के आधार पर समाजवाद के अध्ययन ने उनको समाजवाद की नैतिक व्याख्या करने के लिए

*इतिहास विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, कुमाऊँ विष्वविद्यालय, नैनीताल

बाध्य किया तथा बाद में यही सांस्कृतिक प्रतिभा उनके द्वारा भारतीय समाजवाद में प्रतिफलित की गयी। इसी कारण वह समाजवाद और भारतीय संस्कृति, दोनों के समान रूप से व्याख्याकार हुए।[7]

नरेन्द्र देव के समाजवादी विचारों पर गांधी का व्यक्तित्व, मार्क्सवादी–लेनिनवादी विचारधारा का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। इतिहास समाज के विश्लेषण में वे मार्क्सवाद का सहारा लेते हैं और पूँजीवाद साम्राज्यवाद, फासीवाद का विरोध करते हुए लेनिन को उद्धृत करते हैं।[8] नरेन्द्र देव विचारधारा की दृष्टि से मार्क्सवादी थे। वे वैज्ञानिक समाजवादी होने का दावा करते थे। उनका कहना था कि "हमारे सामने जो काम है, उसे हम तभी कर सकते हैं जब हम समाजवाद के सिद्धान्तों और उद्देश्यों को हृदयगम कर लें तथा परिस्थितियों के सही ज्ञान के लिए मार्क्स द्वारा प्रतिपादित द्वन्द्वात्मक पद्धति को समझें और उसे अपने कार्यकलाप का आधार बनाने का प्रयत्न करें। हमें वैज्ञानिक समाजवाद का आश्रय लेना चाहिए तथा यूरोपियन समाजवाद अथवा सामाजिक सुधारवाद से बचने का प्रयत्न करना चाहिए। विद्यमान सामाजिक व्यवस्था का क्रान्तिकारी रूपान्तर ही परिस्थितियों की आवश्यकता को पूरा कर सकता है। उससे कम किसी चीज से काम नहीं चल सकता।"[9]

कॉलेज के दिनों में बंगाल की राष्ट्रीय चेतना की लहर ने नरेन्द्र देव के विद्यार्थी जीवन को नया सन्देष दिया। डा0 वेनिस व प्रो0 नार्मन ने उनके अध्ययन को विकसित किया। डा0 वेनिस ने दर्शन के प्रति उनमें अभिरूचि उत्पन्न की। दर्षन के विभिन्न सूत्र ग्रन्थों एवं भाश्यों का अध्ययन उन्होंने बनारस संस्कष्त कॉलेज में किया था।[10] उसी समय उन पर राजनीतिक और धर्म का प्रभाव पड़ना षुरू हो गया था। दस वर्ष की अवस्था में वह अपने पिताजी के साथ 1899 से ही कांग्रेस के अधिवेषनों में सम्मिलित होने लगे थे। वहीं उन्होंने लाल, बाल और पाल की त्रिमूर्ति के दर्षन किए और उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हुए। इन सबका मिला–जुला परिणाम यह निकला कि उन पर कांग्रेस व सनातन धर्म के संस्कार दृढ़ होने लगे। वह स्वदेषी भावना का युग था तथा सारे देश में राजनीतिक हलचल थी और सही अवसर पाकर नरेन्द्र देव सन् 1905–06 में कांग्रेस के गरमदल में षरीक हो गये। धीरे–धीरे इनका सम्बन्ध कुछ क्रान्तिकारियों से भी होने लगा। इनके जो साथी विलायत पढ़ने गये थे, वे इनके पास नियमित रूप से लन्दन, पेरिस, जैनेवा, बर्लिन आदि से क्रान्तिकारी साहित्य भेजते रहे। सरकार के प्रतिबन्धों के बावजूद उन्हें लाला हरदयाल का "वन्दे मातरम्" और पैरिस का "इण्डियन सोशओलोजिस्ट" पढ़ने को मिला करता था। इससे पहले कलकत्ता के दैनिक "वन्दे मातरम्" के नियमित पाठक होने के कारण अरविन्द के विचारों का विषेश प्रभाव भी उन पर पड़ चुका था[11] तथा विद्या अध्ययन की समाप्ति के बाद वे होमरूल लीग की फैजाबाद षाखा के मंत्री हो गये।[12]

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच पर जहाँ महात्मा गांधी के नेत्त्व में जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, डा0 राजेन्द्र प्रसाद, राजगोपालाचारी, जे0बी0 कृपलानी जैसे नेता कार्य कर रहे थे वहीं उसी मंच पर कांग्रेस सोषलिस्ट पार्टी के नेता के रूप में नरेन्द्र देव को जयप्रकाष नारायण, डा0 राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, युसुफ मेहरअली, अषोक मेहता, एस0एम0 जोषी और एन0जी0 गोरे जैसे लोगों के नेतष्त्व करने का गौरव प्राप्त हुआ तथा नरेन्द्र देव के नेतष्त्व के कारण ही कांग्रेस की नीतियों में परिवर्तन आया और देष के किसान भारतीय किसान सभा, देशी रियासतों के लोग व प्रजापरिशद जैसे संगठनों के माध्यम से नरेन्द्र देव के नेतष्त्व में कांग्रेस में सम्मिलित हुए। सन् 1934 में कांग्रेस, सोषलिस्ट पार्टी के स्थापना सम्मेलन में अध्यक्ष के रूप में दिया गया उनका भाशण आज भी वैज्ञानिक समाजवाद का प्रमाणिक दस्तावेज माना जाता है।[13]

नरेन्द्र देव के मतानुसार समाजवाद एक राजनीतिक प्रकार या प्रणाली नहीं है। वे समाजवाद को जीवनदर्षन मानते हैं। उनके लिए समाजवाद नवसांस्कृतिक आन्दोलन है जिसका केन्द्र बिन्दु मानव है। मानव की संवेदनशीलता, मानव का षील और मानव की नैतिकता उसके मूलाधार हैं। उनके समाजवादी चिन्तन की रीढ़ मनुष्य और मनुष्यता है। समाजवाद में व्यक्ति का व्यक्ति द्वारा तथा व्यक्तिसमूह का व्यक्तिसमूह द्वारा शोषण समाप्त होगा तभी समाजवाद में व्यक्ति की मर्यादा सुरक्षित रहेगी। साथ ही वे समाजवादी व्यवस्था के लिए समाजवादी समाज को आवश्यक मानते थे।[14] उन्होंने समाजवादी विद्वान बुखारिन की वर्गों की कसौटी तथा विभाजन के सिद्धान्त को आधार मानते हुए मध्यम वर्ग, परिवर्तशील वर्ग, मिश्रित

वर्ग आदि का उल्लेख किया है।[15] वे वर्गहीन समाज की स्थापना के लिए वर्गसंघर्ष की अनिवार्यता को स्पश्ट रूप से स्वीकार करते हैं। वे जिस नैतिकता को मानते थे उसमें अपने विरोधी के प्रति भी नैतिक होने की अनिवार्य प्रतिबद्धता थी। उनके इसी मार्ग से, अपार शोषित जनसमुदाय मुट्ठीभर शोषकों पर जनतांत्रिक रास्ते से विजय प्राप्त कर विषमता को मिटा सकता है। अगर षोशित जनता को यह ज्ञान हो जाए कि शोषण व्यक्ति द्वारा नहीं, बल्कि व्यवस्था द्वारा हो रहा है तो ज्ञान, प्रपत्र अपार समुदाय बहुजन हिताय, पूँजीवादी शोषण की व्यवस्था के स्थान पर समाजवादी शोषण मुक्त समाज–व्यवस्था को बिना एक बूँद खून बहाए स्थापित कर देगा। इस प्रकार की मान्यता रखने का गौरव अकेले नरेन्द्र देव को प्राप्त था। उनकी समाजवादी नैतिकता की तुलना ढूँढें नहीं मिलती।[16]

वह समय युग परिवर्तन का था तथा नरेन्द्र देव युग परिवर्तनकारी घटनाओं से प्रभावित हुए बिना कैसे रह सकते थे। उन्होंने कांग्रेस के सामाजिक आधार को विस्तष्त किया[17] और 1930 में कृषकों की दयनीय दशा का अध्ययन करने के लिए कई जिलों का दौरा किया तथा प्रान्तीय कांग्रेस द्वारा गठित इन्क्वायरी कमेटी के सदस्य की हैसियत से 1931 में अपने सहयोगी सदस्य डा0 सम्पूर्णानन्द के साथ गोरखपुर तथा बस्ती जिले के किसानों की दयनीय अवस्था का विस्तष्त अध्ययन करके अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उनका यह भी मानना था कि जमींदारी प्रथा ही भारतीय किसानों की सारी दुर्दषा की जड़ है। जमींदारी प्रथा का उन्मूलन किए बिना मात्र छुटपुट भूमि सुधारों से किसानों की समस्या हल नहीं की जा सकती। किसानों की बुनियादी मांगों के आधार पर उनकी वर्ग–चेतना को जागृत किया जाय साथ ही इस ऊर्जा का इस्तेमाल आजादी हासिल करने व समाजवादी समाज की रचना के लिए किया जाय।[18] वे समाजवादियों तथा कांग्रेस से अकसर कहा करते थे कि किसानों व मजदूरों की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि समाज का यह वर्ग सबसे अधिक षोशित है। उनका उद्धार करना समाजवाद का प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।[19] उनका सुझाव था कि किसानों के ऋण निरस्त कर दिये जाय तथा उनके लाभ के लिए सस्ते ब्याज पर ऋण उपलब्ध करवाया जाय। गाँव में सहकारी व्यवस्था कायम करके लोकतांत्रिक ग्राम सरकार की स्थापना की जाय। साथ ही वे स्टालिन की इस बात से भी पूर्णरूप से सहमत थे कि किसानों के विषाल समुदाय को समाजवादी विचारधारा से अनुप्राणित करना आवश्यक है।[20]

नरेन्द्र देव असली और नकली समाजवाद में अन्तर स्पश्ट करते हैं। उन्हें मालूम है कि 'समाजवाद' षब्द का कितना गलत उपयोग किया जाता है, इसके लिए वे हिटलर का उदाहरण देते हैं जिसने जर्मन की जनता पर अपना प्रभाव जमाये रखने के लिए अपना प्रतिगामी सिद्धान्तों का प्रचार राष्ट्रीय समाजवाद के नाम पर ही किया था। असली और नकली समाजवाद का एक अन्य दिलचस्प उदाहरण वे रूस के इतिहास से भी देते हैं जहाँ क्रान्ति के समय नरोडनिक ने समाजवादियों का विरोध किया था।[21]

नरेन्द्र देव भारतीय समाजवादी आन्दोलन के साथ–साथ चलते रहे थे। सन् 1934 में स्थापित कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी, इण्डियन नेशनल कांग्रेस के अन्दर काम करती रही।[22] परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने 1948 में यह घोषणा कर दी कि कांग्रेस के अन्दर किसी संगठित गुट या दल को नहीं रहने दिया जायेगा। अर्थात् स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान जो कांग्रेस के अन्दर समाजवादी कांग्रेस या सोशलिस्ट पार्टी बनाकर कार्य करते थे, वह स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद नहीं कर सकते थे।[23] अतः मार्च, 1948 में नासिक सम्मेलन में सोषलिस्ट पार्टी के लोग कांग्रेस से बाहर आ गये और इस सम्मेलन के फैसले के मुताबिक कांग्रेस सोशलिस्टों ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। नरेन्द्र देव व उनके सहयोगियों ने भी उस समय विधान सभा से त्याग–पत्र देकर एक नया आदर्श प्रस्तुत किया[24] और 1948 में सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हुई। इसके साथ ही समाजवादियों ने 'समाजवादी दल' के तौर पर कार्य करना प्रारम्भ कर दिया। जिसे लगातार नरेन्देव का नेतृत्व मिलता रहा। नरेन्द्र देव ने 'मेरे संस्मरण' में कहा कि मुझे यह कहने में प्रसन्नता है कि जब पार्टी का विधान बना तो केवल लोहिया जी और मैं इस पक्ष में थे कि उद्देश्य के अन्तर्गत पूर्ण स्वाधीनता भी होनी चाहिए। अन्त में हम लोगों की विजय हुई।[25] इस प्रकार सबसे पहले अपनी पार्टी में समाजवादी सिद्धान्त व राश्ट्रीयता की मान्यता देना नरेन्द्र देव की ही देन है।

जैसा कि आगे बताया जा चुका है कि समाजवाद की लहर सभी जगह जोर पकड़ रही थी तथा बुद्धिजीवियों में यही विचार हो रहा था कि कांग्रेस में जो गतिरोध आ गया है उससे मुक्ति दिलाने का एक ही रास्ता है; सभी जगह समाजवादी

ढांचे पर संगठित रूप से काम किया जाय।[26] इसी क्रम में 29 मई, 1948 में नरेन्द्र देव ने राममनोहर लोहिया द्वारा आयोजित सम्मलेन का उद्घाटन करते हुए पंचों से गाँवों में षोशितों का संयुक्त मोर्चा कायम करने का अनुरोध किया[27] तथा मार्च, 1949 में पटना में नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में सोशलिस्ट पार्टी का सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में पार्टी के पुराने संविधान की जगह नया संविधान पास कराया गया।[28]

जून, 1950 में मोहन अली की अनुपस्थिति में अशोक मेहता की अध्यक्षता में सोशलिस्ट पार्टी का मद्रास सम्मेलन हुआ। अस्वस्थ होने के कारण नरेन्द्र देव उस सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो सके। मद्रास सम्मेलन में पार्टी के प्रधानमन्त्री जय प्रकाश नारायण द्वारा दिये गये भाषणों से कुछ लोगों का ऐसा विचार बना कि जय प्रकाश नारायण सत्याग्रह का समर्थन करके मार्क्सवाद व गांधीवाद के बीच समन्वय स्थापित करना चाहते हैं। सम्मेलन के कुछ प्रतिनिधियों ने सोशलिस्ट पार्टी के मूल सिद्धान्त "जनतांत्रिक समाजवाद" के बारे में अपना मतभेद प्रकट किया। इन विवादों को दूर करने के लिए नरेन्द्र देव ने एक लेख लिखा, जिसका शीर्षक था "जनतांत्रिक समाजवाद ही क्यों।" इसमें उन्होंने बताया कि नीति वक्तव्य में वे टोटेलिटेरियन कम्युनिज्म के विपक्ष में जनतांत्रिक समाजवाद शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका यूरोप की "सोषलडेमोक्रेसी" से कोई सम्बन्ध नहीं है।[29]

इधर 1952 में आम चुनाव के लिए घोषणा पत्र तैयार करने की जिम्मेदारी एक समिति को दी गयी। जिसके सदस्य नरेन्द्र देव और मुकुट विहारी लाल थे। इस समिति द्वारा तैयार किये गये घोषणा पत्र पर विचार करने के लिए एक षिविर आयोजित किया गया षिविर के सभी भाशण एक पुस्तिका के रूप में "चुनाव घोषणा पत्र" नाम से छपे।[30] चुनाव और सत्याग्रह के जरिए समावाद लाने का स्वप्न देख रहे सोशलिस्ट पार्टी को 1952 के चुनाव में पर्याप्त सफलता नहीं मिली। आम चुनाव में हार के बाद सोषलिस्ट पार्टी के नेताओं की समझ में आ गया कि तत्कालीन हालत में अकेले उनकी पार्टी कांग्रेस का विकल्प नहीं बन सकती। विकल्प बनने के लिए उसे अपनी शक्ति बहुत ज्यादा बढ़ानी होगी और दूसरों से हाथ मिलाना होगा। इसका परिणाम यह हुआ कि सितम्बर, 1952 में सोशलिस्ट पार्टी ने किसान–मजदूर प्रजा पार्टी से मिलकर "प्रजा सोशलिस्ट पार्टी" (प्रजा समाजवादी पार्टी) का निर्माण किया।[31]

दिसम्बर, 1955 में नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में 'प्रजा सोशलिस्ट पार्टी' का गया में सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में जो नीति सम्बन्धी घोषणा पत्र स्वीकार की गयी उसमें मांग की गयी थी कि समाजवादी समाज में राष्ट्रीयकृत उद्योगों की व्यवस्था की जाय, ताकि मजदूरों को स्वतन्त्रता तथा सुरक्षा सुलभ हो सके। इस नीति की विशेषता यह है कि इसमें नैतिकता तथा संस्कृति की समाजवादी व्याख्या प्रस्तुत की गयी है।[32]

उधर जवाहर लाल नेहरू ने 1953 में नरेन्द्र देव, जे0बी0 कृपलानी और जय प्रकाश नारायण आदि सोशलिस्ट नेताओं को मन्त्रीमण्डल में लेना चाहते थे। इस सम्बन्ध में नेहरू और जय प्रकाश नारायण के बीच लम्बी बातचीत हुई तथा जयप्रकाष नारायण ने नेहरू के सामने चौदह सूत्री कार्यक्रम प्रस्तुत किया। उसे नेहरू उचित मानकर भी असामयिक समझते थे। अतः बातचीत आगे नहीं बढ़ी। इस वार्ता का व्यवहारिक परिणाम यह हुआ कि इससे खुद प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के अन्दर मतभेद बढ़ गये। नरेन्द्र देव ने और खासकर राम मनोहर लोहिया तथा उनके साथियों ने पार्टी की इजाजत के बिना इस वार्ता को चलाने के लिए जय प्रकाश नारायण का विरोध किया।[33]

जल्दी ही 1954–55 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी (प्रसोपा) में इससे भी बड़े आन्तरिक कलह पैदा हुई। नरेन्द्र देव के अध्यक्ष पद पर रहते हुए भी राम मनोहर लोहिया के नेतृत्व में पार्टी में टूट हुई और एक नई पार्टी पुराने नाम से "सोशलिस्ट पार्टी" बनाई गयी। (अर्थात् जब प्रजा सोशलिस्ट पार्टी कांग्रेस के प्रति सहयोग एवं मैत्री का रूख अपनाने लगा तो राममनोहर लोहिया ने सन् 1955 में एक नए समाजवादी दल का गठन कर लिया नए दल का नाम "भारतीय समाजवादी दल" रखा गया।)[34] जय प्रकाश नारायण उससे पहले ही विनोवा भावे को 'जीवनदान' कर दिया अर्थात् उन्होंने प्रतिज्ञा की कि अब वे अपने जीवन के बाकी दिन और सारी शक्ति सर्वोदय के काम में लगायेंगे। जय प्रकाश के इस कदम से नरेन्द्र देव बहुत नाराज हुए। तत्कालीन कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के अन्य नेता अच्युत पटवर्धन, रामानन्दन मिश्र और कमला देवी चट्टोपाध्याय

उससे अलग हो गये थे। युसुफ मेहरअली का निधन हो चुका था। अरूणा आसफ अली का झुकाव कम्युनिस्ट पार्टी की तरफ था।[35]

समाजवादी आन्दोलन के भटकाव और विघटन के दिनों में भी नरेन्द्र देव किसी प्रकार उसके बड़े भाग को संभाल सके और अपने निधन से दो माह पहले दिसम्बर, 1955 में प्रजा सोशलिस्ट पार्टी को उसके गया सम्मेलन में एक 'नीति घोशणा' दे गये। बौद्ध दर्शन का प्रकाण्ड विद्वान, भारतीय संस्कृति का संरक्षक, स्वतन्त्रता सेनानी और समाजवादी आन्दोलन के नेतष्त्व में अग्रणी तपस्वी नरेन्द्र देव भले ही 9 फरवरी, 1956 में इस संसार से चले गये, परन्तु उनके निधन के बाद भी समाजवादी दल चलते रहे। मगर आज वैसा कोई दल, कोई बड़ा प्रेरणादायक आन्दोलन नहीं है जो नरेन्द्र देव ने दिया था और आज वह भी जीवित रूप में सामने नहीं है जो जयप्रकाश नारायण, लोहिया तथा अशोक मेहता की पीढ़ी ने संजोया था। अगर आज हम लोकतांत्रिक समाजवाद के आन्दोलन को पुर्नजीवित कर सके, तो यही उनकी स्मषति के प्रति सच्ची श्रद्धान्जलि होगी।[36]

अन्त में हम यह कह सकते हैं कि नरेन्द्र देव के समाजवाद का मुख्य उद्देश्य ऐसा वर्ग विहीन समाज की स्थापना करना था जिसमें ना कोई शोषक होगा और न कोई शोषित होगा बल्कि समाज सहकारिता के आधार पर निर्मित व्यक्तियों का एक सामूहिक संगठन होगा। इस कार्य में उन्होंने अपना पूरा योगदान दिया। वे हमेशा ही मार्क्सवाद–लेनिनवाद व गांधीवाद का गहरा अध्ययन करके देश की परिस्थितियों के अनुरूप एक भारतीय समाजवादी चिन्तन प्राप्त करना चाहते थे तथा इस दृष्टि से उनके विचार मौलिक हैं।

सन्दर्भ सूची

1. कमल, डा0 के0 एल0 : समाजवादी चिन्तनः प्रकाशक रिसर्च पब्लिकेशन्स त्रिपोलिया, जयपुर : वितरक विष्वभारतीय पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली : 2008 : पृष्ठ–1–2
2. शंकर, डा0 षोभा : आधुनिक भारतीय समाजवादी चिन्तन : प्रकाशित साहित्य भवन प्रा0 लिमिटेड 93, के0पी0 कक्कड़ रोड, इलाहाबाद : 1980 : पृष्ठ–127.
3. उक्त : पृश्ठ–150.
4. दीक्षित, जगदीश चन्द्र : आचार्य नरेन्द्र देव : प्रकाशक अशोक प्रियदर्शी निर्देशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश : 1989 : पृष्ठ–48.
5. भसीन, प्रेम : लिमगे, मधु : सिंह, विनोद प्रसाद : षर्मा, हरिदेव : आचार्य नरेन्द्र देव जन्मशती ग्रन्थ : ऐडियेन्ट पब्लिषर्स ई–188 कालका जी, नई दिल्ली–1990 : पृष्ठ–85.
6. उक्त : पृष्ठ–86–87.
7. उक्त : पृष्ठ–87.
8. षंकर, डा0 षोभा : पृष्ठ–150–151.
9. षर्मा, योगेन्द्र कुमार : भारतीय राजनीतिक विचारक : भाग–2 : कनिष्का पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली : 2001 : पृश्ठ–458.
10. भसीन, प्रेम : लिमगे, मधु : सिंह, विनोद प्रसाद : शर्मा, हरिदेव : पृष्ठ–86.
11. सिंह, भगवती शरण : आचार्य नरेन्द्र देव : प्रकाशन सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार : स्वतन्त्र भारत प्रेस, एस्प्लेनेड रोड, नई दिल्ली : 1991 : पृष्ठ–65, 67.
12. भसीन, प्रेम : लिमगे, मधु : सिंह, विनोद प्रसाद : षर्मा, हरिदेव : पृष्ठ–100.
13. उक्त : पृष्ठ–179.
14. सिंह, भगवती शरण : पृष्ठ–65.

15. अवस्थी, डा0 ए0 : अवस्थी, डा0 आर0 के0 : आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन : रिसर्च पब्लिकेषन्स त्रिपोलिया, जयपुर–2 : 2007 : पृष्ठ–413.

16. सिंह, भगवती शरण : पृश्ठ–67.

17. दीक्षित, जगदीश चन्द्र : पृष्ठ–49.

18. उक्त : पृष्ठ–69.

19. षंकर, डा0 शोभा : पृष्ठ–138.

20. षर्मा, योगेन्द्र कुमार : पृष्ठ–460.

21. षंकर, डा0 शोभा : पृष्ठ–153.

22. भसीन, प्रेम : लिमगे, मधु : सिंह, विनोद प्रसाद : शर्मा, हरिदेव : पृष्ठ–204.

23. मोहन, सुरेन्द्र : आचार्य नरेन्द्र देव और उनका युग : प्रकाषक आचार्य नरेन्द्र देव समाजवादी संस्थान, वाराणसी : जून 1989 : पृष्ठ–4.

    : षंकर, गिरिजा : भारत में लोकतान्त्रिक समाजवादी आन्दोलन (भाग–1) : विश्व भारतीय पब्लिकेशन्स नई दिल्ली : 2004 : पृष्ठ–402.

24. सिंह, अयोध्या : समाजवाद भारतीय जनता का संघर्श : अनामिका पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटरर्स प्रा0 लि0 4697/3, 21ए, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली : 2007 : पष्ठ–250.

25. भसीन, प्रेम : लिमगे, मधु : सिंह, विनोद प्रसाद : शर्मा, हरिदेव : पृष्ठ–204.

26. दीक्षित, जगदीश चन्द्र : पृष्ठ–32.

27. उक्त : पृष्ठ–54.

28. सिंह, अयोध्या : पृष्ठ–250.

29. दीक्षित, जगदीश चन्द्र : पृष्ठ–54–55.

30. उक्त : पृष्ठ–55.

31. सिंह, अयोध्या : पृष्ठ–255.

32. दीक्षित, जगदीश चन्द्र : पृष्ठ–55.

33. सिंह, अयोध्या : पृष्ठ–252.

34. मोहन, सुरेन्द्र : पृष्ठ–17.

    : शर्मा, योगेन्द्र कुमार : पृष्ठ–464.

35. सिंह, अयोध्या : पृष्ठ–252, 256.

36. मोहन, सुरेन्द्र : पृष्ठ–17–18.

6. “Centre may be setup Second SRC to Settle Statehood demand , the Times of India, Dec. 25, 2009

7. Bambhari C.p, Division of U.P- Are Small States better off ? the economic times , Nov. 26, 201

8. Ibid, P.204